H.S कविता

(273) 15

यहाँ एक नदी बहती थी....

यहाँ एक नदी बहती थी
जो दिखने में काँच जैसे थे।
जिसकी कल-कल आवाज़ में
खो गई थी गाँववाले हम।

यहाँ एक नदी बहती थी
जो आसमान को साथ ले जाते थे।
सफ़ेद-लाल पत्थर भरे वह
नदी में नीले मच्छली खेलती थी।

हरी पहाड़ की बेटी हूँ बेटी हूँ वे,
काली बादल की पत्नी हूँ वे,
जनम किया था ऊँची पहाड़ी,
प्यार किया वह काली मेघ।

सूरज की हर रोशनी में
चमकती थी उसकी हर बूँदें।
मोती वर्ष में खुबसूरत बनकर
देते थे वह अमृत हम को।

मीठी पानी बहाती थी वे,
सुरीली आवाज़ बनाती थी वे
फुल की नीचे छिप-छिप कर
सागर तक फैलाती थी उसकी कहानी।

सागर उसकी माता थी,
जनम किया भी वह था,
मौत भी उसकी गोली पाव पर
फिर भी नदी बहती थी।

अपने किनारों की खुबसूरती बढ़कर
फूलों की लहरें बनाकर,
सुंदर किया हमारी गाँव को
सब जानते है इसकी कहानी।

बड़ी बारिश में आँसू बनकर
बड़ी गर्मी में प्यास बनकर
बड़ी खुशी में साथ हँसकर
साथ थे वे हर दिन गाँव पर।

दादा बोला, "उस स्वर्ग पर, वह
नीली शीतलता में तैरता ही
बड़े भाग्य है आज भी, जब
वह नदी हमारा सपना बना।"

स्वार्थी मानव, मार डाला वह
स्वर्ग को काले हाथों से।
मरने के लिए सागर तक जाने
की जरूरत नहीं था नदी को।

कचरा डालकर, रेत ले जाकर
बना दिया बेचारे को काला।
वह काँच पर अब धूप को
अंदर भी नहीं जा सकता।

पहाड बनी वे कचरा के,
बदबू फैलाया लाश जैसे।
मच्छली नहीं, फूलों नही
सिर्फ काली मिट्टी बाकी है।

उसकी बुरी हालत देखकर
काली बादल आँखें बंद किया।
सूरज लाल आँख खोला, अब
बरस नही, सिर्फ धूप ही धूप।

रोने केलिए ~~अश्~~ अश्रु नही है,
साथ में होने केलिए कोई भी नही है,
मार डाला, मानव उस बेचारे को
अब उनका लाश ही बाकी है।

प्यास से मरा मानव, वह
बेचारी नदी की जैसे। वे
वे गर्मी में अब एक बूँद
पानी की खोज में मग्न है।

~~जंगल की हाथों से बहती~~
~~वह नदी अब उस~~

जंगल की ~~हाथों~~ दोनों हाथों से
बहती वह नदी अब उस
शून्य मिट्टी में एक बूँद पानी
देखने कलिए चाहती है।

नाव नही, नहर नही
काली बादल नही, जंगल नही।
नदी के बिना गया वह सब
सपना की रूप में मानव की मन पर।

स्वार्थी मानव देखो यह सब
तुम्हारे दो हाथों से
बन गई मेरी स्वर्ग नदी एक
सपना, युवपीढी को।

वह मीठी पानी, वह सुरीली आवाज
मेरी पर्वाई, आसमान की भी
वापस लाओ मानव मेरी
वह दिनों, ~~मेरजब~~ में नदी के साथ थी।

नदी की लाश को बहाया सागर में,
मानव ~~बड़ा~~ गिरा बड़े खुशी में।
उसे नही जानता था
छिपते हुए मुसीबत को।

खाया पानी ने हमारे देश को
मार डाला सारे मानव को
नदी फिर भी जनम किया
~~लक्ष्य~~ लक्ष्य पूरी करकर वापस गया।

ऊपर तारे हँस रहे थे,
लगा कि नदी

~~सूरज गर्मी फैलाया,~~
~~हम गया लाश देखने केलिए।~~
~~शून्य भूमी के गरम रेत में~~
~~दादा के दो आँसू गिरा~~

सूरज गर्मी फैलाया,
हम गया लाश देखने केलिए,
घायल हुए किल से गया
यादों को जगाने केलिए।

शून्य भूमी के गरम रेत में
गिरा दादा के दो आँसू।
वह दो आँसू बहकर सागर
की आँखों तक गया।

"नहीं था यह एक रेगिस्तान,
बहती थी यहाँ एक नदी"।
दादा की शब्दों दूर तक फैला,
~~प्रकृती भी बोला "बहती थी एक नदी यहाँ।"~~
प्रकृती भी कहा "यहाँ एक नदी बहती थी।"